Sat-Chit-Ananda (Being-Consciousness-Bliss): The Universal Self Across Spiritual Traditions – a reflection inspired by Sri Ashish's teachings

At the heart of every authentic spiritual tradition is a common thread — a return to what is real, unchanging, and silently complete.

In Advaita Vedanta (non-dual philosophy), this truth is described in three words: ***Sat-Chit-Ananda*** — Being-Consciousness-Bliss.

It is not a goal. It is not a belief. It is a description of your essence — what you are when the seeker dissolves, when the mind falls silent, and truth shines by itself.

As Sri Ashish teaches:

"You are not the one trying to be.
You are Being itself — aware, silent, and whole."

This triune expression is not confined to one path. It is echoed, reflected, and rephrased throughout the world's wisdom traditions.

SAT — Truth / Existence / That Which Is

In Sri Ashish's words, **Sat** is the unmoving ground of all experience.
It is not an object, not a belief — but the truth that remains when all else changes.

Across traditions:

- **Hinduism**: Sat is the eternal reality, the substratum of all phenomena — *Brahman*.
- **Buddhism**: *Tathata* (Suchness) points to the inherent nature of reality, beyond concepts.
- **Jainism**: Sat corresponds to the soul (*jiva*) as eternal, distinct from changing karmic impressions.
- **Judaism**: "*Ehyeh Asher Ehyeh*" — "I Am That I Am" — the unchanging essence of God (Exodus 3:14).
- **Christianity**: God as the "Alpha and Omega," the beginning and the end — pure Being.
- **Islam**: *Al-Haqq* — one of the 99 names of Allah, meaning "The Truth."
- **Sikhism**: *Satnam* — the "True Name," the undying presence behind all names.
- **Taoism**: The Tao that cannot be spoken — that which is eternal, present, and ineffable.

Though language differs, the essence is the same:
Truth is not something to believe in — it is what is.

CHIT — Awareness / Consciousness / Knowingness

Chit is not mental activity or knowledge.
As Sri Ashish explains, it is the silent knowing that sees thought come and go but remains untouched.
It is not *what you know* — it is the *knowing itself*.

Across traditions:

- **Hinduism**: Chit is pure consciousness — the illuminating power of Brahman.
- **Buddhism**: *Rigpa* or *Vijñāna* — the knowing faculty that reflects all things clearly.
- **Jainism**: Consciousness is the defining characteristic of the soul, untouched by karma.
- **Judaism**: *Binah* and *Chokhmah* — deep inner knowing and intuitive wisdom.
- **Christianity**: The "Light of Christ" as inner illumination; divine awareness.
- **Islam (Sufism)**: The Eye of the Heart — inner awareness through which truth is seen.
- **Sikhism**: Awareness (*Surat*) is the first doorway to merging with the One.
- **Taoism**: *Wu wei* — effortless awareness, action in harmony with the Tao.

What is known may change.
But the knower — the space of pure awareness — does not.

ANANDA — Bliss / Peace / Natural Joy

Sri Ashish reminds us that **Ananda** is not pleasure, nor is it emotional happiness.
It is the natural joy that arises when the ego falls silent.
When nothing is missing, and nothing is needed — this is Ananda.

Across traditions:

- **Hinduism**: Ananda is the bliss of the Self realized — unchanging and causeless.
- **Buddhism**: *Nirvana* — the cessation of suffering and the arising of inner peace.
- **Jainism**: The liberated soul dwells in *siddhashila* — a state of infinite bliss.

- **Judaism**: *Shalom* — not just peace, but wholeness and harmony with God.
- **Christianity**: "The peace that surpasses all understanding."
- **Islam**: *Sakinah* — the tranquility that descends upon the heart in surrender.
- **Sikhism**: *Anand* — bliss through devotion and unity with the Divine.
- **Taoism**: The joy of harmony, simplicity, and effortless being.

Ananda is the result of nothing — and the expression of everything.
It is the silent smile of existence realizing itself.

The Universality of Truth

Sri Ashish often reminds us:

"The paths may differ,
but the essence being pointed to is the same.
When belief dissolves, what remains is Being.
When effort dissolves, what remains is Awareness.
When seeking dissolves, what remains is Joy."

These three — **Sat, Chit, Ananda** — are not philosophical ideas.
They are your direct nature, now.
Not as a thought. But as what you are when all else is let go.

Every true tradition points here.

An Invitation to Remember

You do not need to believe in anything.
You only need to stop overlooking the truth that is already present.

Call it *Brahman*, *God*, *Tao*, *Awareness*, or *I AM* —
The essence is the same.

The same flame reflected in different mirrors.
The same light spoken in different languages.
The same silence, returning through every sacred path.

सत्-चित्-आनन्दः: आध्यात्मिक परम्पराओं में सार्वभौमिक आत्मा

श्री आशिष की शिक्षाओं से प्रेरित एक चिन्तन

प्रत्येक प्रामाणिक आध्यात्मिक परंपरा के हृदय में एक सामान्य सूत्र होता है — उस सत्य की ओर लौटना जो वास्तविक है, अपरिवर्तनीय है, और मौनपूर्ण पूर्णता में स्थित है।

अद्वैत वेदान्त में, इस सत्य को तीन शब्दों में वर्णित किया गया है: **सत्-चित्-आनन्दः** — अस्तित्व, चैतन्य, और आनन्द।

यह कोई लक्ष्य नहीं है। यह कोई विश्वास नहीं है। यह आपके स्वभाव का वर्णन है — आप वही हैं जब साधक लीन हो जाता है, जब मन मौन हो जाता है, और सत्य स्वयं प्रकट होता है।

जैसा कि श्री आशिष कहते हैं:

"तुम वह नहीं हो जो बनने की चेष्टा कर रहा है। तुम स्वयं सत्ता हो — सजग, मौन, और पूर्ण।"

यह त्रित्व अभिव्यक्ति किसी एक मार्ग तक सीमित नहीं है। यह संसार की विविध ज्ञानपरम्पराओं में परिलक्षित होती है।

सत् — सत्य / अस्तित्व / जो है वही

श्री आशिष के शब्दों में, सत् समस्त अनुभवों की अचल भूमि है। यह कोई वस्तु नहीं है, कोई विश्वास नहीं — यह वह सत्य है जो परिवर्तन के पार स्थिर रहता है।

विभिन्न परम्पराओं में:

- **हिन्दू धर्म**: सत् शाश्वत सत्य है — ब्रह्म, जो सभी का आधार है।
- **बौद्ध धर्म**: तथता — जो 'जैसा है वैसा' रूप, शब्दातीत वास्तविकता।
- **जैन धर्म**: सत् जीव की शाश्वत सत्ता है, जो कर्मों से भिन्न है।
- **यहूदी धर्म**: "एह्येह अशेर एह्येह" — "मैं हूँ जो मैं हूँ" (निर्गमन 3:14)।
- **ईसाई धर्म**: ईश्वर — "आदि और अंत", शुद्ध अस्तित्व।
- **इस्लाम**: *अल-हक़्क़* — अल्लाह के 99 नामों में एक, जिसका अर्थ है 'सत्य'।
- **सिख धर्म**: *सतनाम* — 'सच्चा नाम', नामों के पार का सत्य।
- **ताओ धर्म**: वह ताओ जो कहा नहीं जा सकता — जो शाश्वत और अनिर्वचनीय है।

भाषा भिन्न हो सकती है, परन्तु सार एक ही है: **सत्य कोई विश्वास नहीं — वह है जो है।**

चित् — चेतना / सजगता / जानने का स्वरूप

चित् कोई मानसिक प्रक्रिया या ज्ञान नहीं है। जैसा कि श्री आशिष बताते हैं, यह मौन ज्ञान है जो विचारों को आता-जाता देखता है पर स्वयं अछूता रहता है। यह 'क्या जाना गया' नहीं — 'जानना' स्वयं है।

विभिन्न परम्पराओं में:

- **हिन्दू धर्म**: चित् ब्रह्म की प्रकाशरूप चेतना है।
- **बौद्ध धर्म**: *ऋग्पा* या *विज्ञान* — निर्मल बोध की क्षमता।
- **जैन धर्म**: चेतना आत्मा का मुख्य गुण है, जो कर्म से अछूता है।
- **यहूदी धर्म**: *बिनाह* और *खोक्माह* — अंतर्ज्ञान और विवेक की शक्तियाँ।
- **ईसाई धर्म**: मसीह का प्रकाश — अंतरात्मा की जागरूकता।
- **सूफ़ी परंपरा**: दिल की आँख — वह दृष्टि जिससे सत्य देखा जाता है।
- **सिख धर्म**: *सुरत* — सजगता, एक में विलय का द्वार।
- **ताओ धर्म**: *वु वेई* — सहज सजगता, ताओ के साथ सामंजस्यपूर्ण कर्म।

ज्ञेय बदल सकता है, **परन्तु ज्ञाता — शुद्ध चेतना का क्षेत्र — नहीं बदलता।**

आनन्द — शांति / परम संतोष / सहज उल्लास

श्री आशिष हमें याद दिलाते हैं कि आनन्द सुख या भावनात्मक प्रसन्नता नहीं है। यह वह प्राकृतिक उल्लास है जो तब प्रकट होता है जब अहंकार मौन हो जाता है।

जब कुछ भी अधूरा नहीं होता, और कुछ भी वांछनीय नहीं होता — वही आनन्द है।

विभिन्न परम्पराओं में:

- **हिन्दू धर्म**: आत्मसाक्षात्कार से उत्पन्न निष्कारण और अचल आनन्द।
- **बौद्ध धर्म**: *निर्वाण* — दुःख की समाप्ति और आंतरिक शांति का उदय।
- **जैन धर्म**: मुक्त आत्मा *सिद्धशिला* में अनन्त आनन्द में स्थित होती है।
- **यहूदी धर्म**: *शलोम* — केवल शांति नहीं, अपितु ईश्वर के साथ पूर्णता।
- **ईसाई धर्म**: "वह शांति जो समझ से परे है।"
- **इस्लाम**: *सकीनाह* — आत्मसमर्पण में हृदय पर उतरने वाली शांति।

- **सिख धर्म**: *आनंद* — भक्ति और एकता से प्राप्त उल्लास।
- **ताओ धर्म**: सहजता, सरलता और ताओ के साथ सामंजस्य का उल्लास।

आनन्द कुछ का परिणाम नहीं — वह स्वयं सब कुछ की अभिव्यक्ति है।

यह अस्तित्व की मौन मुस्कान है जो स्वयं को पहचानती है।

सत्य का सार्वभौमिक स्वरूप

श्री आशिष प्रायः स्मरण कराते हैं:

"मार्ग भिन्न हो सकते हैं, परन्तु संकेतित सार एक ही होता है। जब विश्वास लय हो जाता है, तो शेष रहता है — अस्तित्व। जब प्रयास लय हो जाता है, तो शेष रहता है — चेतना। जब खोज लय हो जाती है, तो शेष रहता है — आनन्द।"

ये तीन — **सत्, चित्, आनन्द** — दार्शनिक कल्पनाएँ नहीं हैं। ये आपकी सीधी, जीवित प्रकृति हैं — अभी। विचार रूप में नहीं, परंतु उस रूप में जो शेष रह जाता है जब सब कुछ छोड़ दिया जाता है।

प्रत्येक सच्ची परम्परा यहीं इंगित करती है।

एक निमंत्रण — स्मरण का

आपको किसी भी बात पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है। केवल उस सत्य को नज़रअंदाज़ करना छोड़ दीजिए जो पहले से ही उपस्थित है।

चाहे उसे ब्रह्म कहें, ईश्वर, ताओ, सजगता, या 'मैं हूँ' —
सार वही है।

विभिन्न दर्पणों में एक ही ज्योति परावर्तित होती है।
विभिन्न भाषाओं में एक ही सत्य बोला जाता है।
विभिन्न पथों से एक ही मौन पुकारता है — घर लौट आओ।